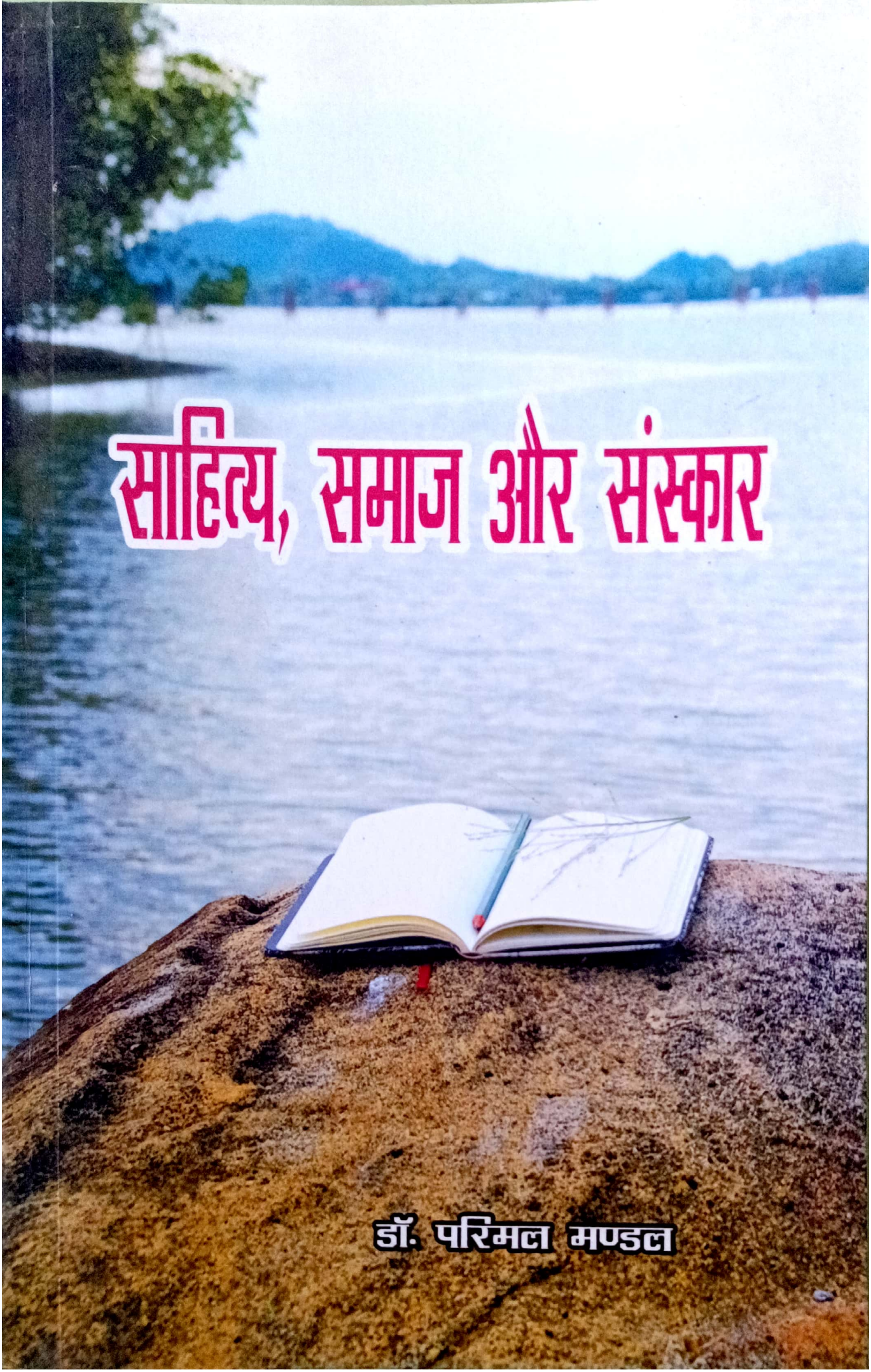

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य, समाज और संस्कार

सम्पादक : डॉ. परिमल मण्डल

प्रकाशक :- शोध प्रकाशन

प्रकाशक का पता :- हिसार(हरियाणा)

ISBN :- 978-81-19110-16-2

प्रिंटर :- खालसा प्रिंटर

संस्करण :- प्रथम (2023)

कॉपीराइट :- शोध प्रकाशन, हिसार

(लेख में दिए विचार लेखकों के अपने विचार है। इसके लिए प्रकाशक या सम्पादक जिम्मेदार नहीं है। विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र हिसार, हरियाणा होगा।)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

क्र सं	अध्याय	पृष्ठ
	अनुक्रमणिका	iii
1.	प्राचीन भारतीय संस्कार और आधुनिक समाज डॉ. परिमल मण्डल	1-19
2.	साहित्य और समाज का सम्बन्ध : एक अवलोकन प्रहलाद सिंह अहलूवालिया	20-26
3.	डॉ.एम.डी.इंगोले द्वारा लिखित (आत्मकथा) 'यादों के झरोखे से' : एक अध्ययन -डॉ.आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	27-34
4.	सामाजिकसंस्कारविषयरत्नसागरम्-श्रीमद्रामायणम् डॉ.सि हेच्. पवन् कुमारः	35-48
5.	साहित्य, समाज और संस्कार बनवारी शर्मा रुह	49-53
6.	উপনিষদকালীন শিক্ষার বর্তমান প্রাসঙ্গিকতা পাপিয়া গঁড়াই	54-65
7.	রামায়ণে নারীর অধিকার স্বরলিপি বাঁক	66-72
8.	हरिऔध की साहित्य साधना का स्वरूप प्रसादराव जामि	73-77
9.	साहित्य, समाज और संस्कार: आधुनिक संदर्भ में	78-87

ISBN : 978-81-19110-16-2

प्राचीन भारतीय संस्कार और आधुनिक समाज

डॉ. परिमल मण्डल, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग
स्वर्णमयी योगेन्द्रनाथ महाविद्यालय, नन्दीग्राम, पूर्व मेदिनीपुर

परिचय-

संस्कार शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय होकर 'सम्परिभ्यां करोतौ भूषणे' सूत्र से सुट् का आगम होकर बनता है। इसका प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। जैसे डॉ. राजबली पाण्ड्ये ने अपनी पुस्तक हिन्दी संस्कार नामक ग्रन्थ में संस्कार शब्द के अर्थ बताते है। उनके मते संस्कार के अर्थ प्रयोग शिक्षा, संस्कृति प्रशिक्षण, सौजन्य, पूर्णता, व्याकरण सम्बन्धी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा, आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव-क्रिया, स्मरण शक्ति पर पडनेवाला प्रभाव आदि[1] है। संस्कृत साहित्य के महान कवि कालिदास कुमारसम्भवम् महाकाव्य में संस्कार शब्द को शुद्धि अर्थ में प्रयोग किया है। यथा-

"संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च[2]"।

अभिज्ञानशकुन्तलम् नाटकमें संस्कार शब्द को आभूषण अर्थ में प्रयोगि किया गया है। यथा-

"स्वभाव सुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते[3]"।

हितोपदेश मे संस्कार को छाप अर्थ में प्रयोग मिलता है-

"यन्नेव भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्[4]"।

---

[1] हिन्दु संस्कार, डॉ.राजबली पाण्ड्ये, पृष्ठ. 18
[2] कुमारसम्भवम् 1/28
[3] अभिज्ञानशकुन्तलम् 7/33
[4] हितोपदेश 1/8

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

मीमांसा दर्शन में यज्ञाङ्गभूत पुरोडाश आदि की विधिवत् शुद्धि से इसका आशय समझ○ाते है[5]। अद्वैतवेदान्ती जीव पर शारीरिक क्रियाओं के मिथ्या आरोप को संस्कार मानते है[6]। मनुस्मृतिकार ने-

"कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च[7]"।

अर्थात् शरीर के पवित्र बनाने के लिए धार्मिक अनुष्ठान की विधि को हि संस्कार कहा है। महर्षि चरक के अनुसार संस्कार पहले से विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनकी जगह सद्गुणों का आधान कर देने का नाम है। इसप्रकार से और भी अनेक अर्थ मिलते है।

संस्कारों की संख्या-

संस्कारों की प्रारम्भ वैदिक काल से पहले ही हो चुका था, जैसा कि वेदों के विविध कर्मकाण्ड से ज्ञात होता है। लेकिन वैदिक साहित्य में पृथकरूप से संस्कार शब्द के उल्लेख नहीं मिलते है। सबसे पहले गृह्यसूत्र में संस्कारों का वर्णन मिलते है। उसके बाद धर्मसूत्रों में संस्कारों का वर्णन मिलता है। संस्कार कितने प्रकार के इसमें भी विभिन्न ग्रन्थों प्रयोजनानुसार संस्कार के संख्या बताये है। जैसे गौतम धर्मसूत्र में अष्ट आत्मगुणों के साथ 40 संस्कारों के सूची दी गई है। मनुस्मृति में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त 13 संस्कारों के सूची दिया है[8]। याज्ञवल्क्यस्मृति में मनु के केशान्त संस्कारों को छोड़कर वाकि संस्कारों को गिनाया है। पुराणों भी विविध संस्कारों का उल्लेख है, किन्तु महर्षि व्यास प्रणीत व्यासस्मृति में वर्णित 16 संस्कार हैं[9]। राजबली पाण्ड्ये अपने पुस्तक हिन्दु संस्कार नामक ग्रन्थ में 16 संस्कार के वर्णना करते है। वे महत्वपूर्ण सोलह संस्कार है-

---

[5] प्रेक्षणादिजन्यसंस्कारो यज्ञाङ्गपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः, वाचस्पत्य वृहदभिधान, 5, पृष्ठ- 4188

[6] स्नानाचमनादिजन्याः संस्कारा देहे उत्पाद्यमानानि तदभिधानानि जीवे कल्प्यन्ते, वाचस्पत्य वृहदभिधान, 5, पृष्ठ- 4188

[7] मनुस्मृति 2/27

[8] मनुस्मृति 2/15, 2/28, 29, 31, 32, 3/1,2,3

[9] गर्भाधानं पुंसवनं सीमंतो जातकर्म च। नामक्रियानिष्क्रमणेअन्नाशनं वपनक्रियाः।। कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारंभक्रियाविधिः। केशांत स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः।। त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः। (व्यासस्मृति 1/13-15

ISBN : 978-81-19110-16-2

1. गर्भाधान संस्कार
2. पुंसवन संस्कार
3. सीमन्तोन्नयन संस्कार
4. जातकर्म संस्कार
5. नामकरण संस्कार
6. निष्क्रमण संस्कार
7. अन्नप्राशन संस्कार
8. चूडाकरण संस्कार
9. कर्णबेध संस्कार
10. विद्यारम्भ संस्कार
11. उपनयन संस्कार
12. वेदारम्भ संस्कार
13. केशान्त संस्कार
14. समावर्तन संस्कार
15. विवाह संस्कार
16. अन्त्येष्टि संस्कार

इनमें से गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन ये तीन संस्कार जन्म से पूर्व किए जाते है। जन्म से पूर्व करने के कारण इसे प्राग्-जन्म संस्कार कहते है। जातकर्म से लेकर कर्णबेध संस्कार तक वाल्यकाल में किया जानेवाला संस्कार है, इसलिए इसे वाल्यवस्था के संस्कार कहते है। विद्यारम्भ से लेकर समावर्तन तक शिक्षाग्रहण के लिए प्रयुक्त होता है इसलिए इसे शैक्षणिक संस्कार कहते है। शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश के लिए शादी करना होता है जो कि पन्द्रहवा विवाह संस्कार के नाम से जाना जाता है और मृत्यु के बाद जो संस्कार किया जाता है वह सोलहवा संस्कार अन्त्येष्टि संस्कार है। इसकी विस्तृत पद्धति संस्कारों के रूप में भारतीय धर्मग्रन्थ में वर्णित है। निम्न मे इन्हीं संस्कारों का संक्षेप विवचन कर रहा हुं।

1. गर्भाधान संस्कार-

मानवजीवन के समस्त संस्कारों यह प्रथम संस्कार है। विवाह के बाद उत्तम पुत्र प्राप्ति के लिए जिस कर्म के द्वारा पति-पत्नी के संयोग से पति अपने पत्नी के गर्भ

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

में वीर्य स्थापित करता है उसे गर्भधारण संस्कार कहते है[10]। गर्भाधान उसको कहते हैं कि जो-

"गर्भस्याSSधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं
यस्मिन्येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्[11]"॥

अर्थात् गर्भ का धारण, अर्थात् वीर्य का स्थापन गर्भाशय में स्थिर करना जिस संस्कार से होता है उसी को गर्भाधान संस्कार कहते है। शौनक गर्भाधान के परिभाषा देते हुए कहते है-

"निषिक्तो यत्प्रयोगेन गर्भः संधार्यते स्त्रिया।
तद्गर्भालम्भनं नाम कर्म प्रोक्तं मनीषिभिः[12]" ॥

अर्थात् जिस कर्म के पूर्ति से स्त्री पति द्वारा दिया हआ शुक्र धारण करती है उसे गर्भालम्भन अथवा गर्भाधान संस्कार कहते है। विवाह के बाद पति और पत्नीं दोनो मिलकर एकसाथ अपने भावी संतती के बारे में सोच कर दोनों जब सम्पूर्णरूप से तैयार हो जावे तब यह संस्कार करना चाहिए। संस्कार करने से पूर्व घर का उचित वातारवण होना चाहिए जिसमें जरा भी चिंता और तनाव नहीं होना चाहिए तो ही आप अपने जन्म लेने वाले बच्चे का अच्छा भविष्य निर्मित कर सकते हैं।

2. पुंसवन संस्कार-

"पुमान् सूयते येन कर्मणा तत् पुंसवनम् इति"। अर्थात् जिस क्रिया के माध्यम से पुरुषसन्तान उत्पन्न हो वह क्रिया को पुंसवन संस्कार कहता है। पारस्कर गृह्यसूत्र में कहते है-

"अथवा पुंसवन पुरा स्पन्दत इति मासे द्वितीये तृतीये वा"[13]।

अर्थात् यह संस्कार गर्भधारण के दुसरे अथवा तीसरे महिने में पुत्रसन्तान उत्पन्न होने के लिया किया जाता है। अथर्ववेद में भी पुंसवन संस्कारके वर्णना मिलते है। सुश्रुत कहते है-

"दोषाभिघातैः गर्भिण्या यो यो भागः प्रपीड्यते।

---

[10] गर्भः संधार्यते येन कर्मणा तद्गर्भाधानमित्यनुगतार्थं कर्मनामधेयम्| – पूर्वमीमांसा 1/4/2

[11] संस्कारविधिः, गर्भाधानसंस्कार, पृष्ठ-25

[12] वीर मित्रोदय संस्कार में उद्धृत

[13] संस्कारविधि, पुंसवनम्

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

सः सः भागः शिशोस्तस्य गर्भस्थस्य प्रपीड्यते"[14] ॥

अर्थात् किसी भी शारीरिक दोष के कारण गर्भवती स्त्री का जो जो भी अङ्ग पीड़ित होता है, गर्भ में स्थित शिशु का वही वही अङ्ग पीड़ित होने लगता है। इस संस्कार हेतु विभिन्न गृह्यसूत्रों में पृथक पृथक विधियों का विधान किया गया है। आश्वलायन गृह्यसूत्र में पारस्कर के अनुसार सर्वप्रथम पति द्वारा पत्नी के दक्षिण नासापुट को सूँघने तथा उसको नासारन्ध्रों में जड़ी बुटियों के रस के अनुसेचन का विधान है। उसके बाद पति पत्नी के उदर अथवा नाभिस्थ का समन्त्रक स्पर्श करके पुत्रोत्पत्ति के कामना व्यक्त करता है। सूत्रस्थान में शुश्रुत ने कहा है-

"सुलक्षणा-वटशुङ्ग सहदेवी विश्वदेवानाभिमन्यनमय क्षीरेणाभिद्युष्टय त्रिचतुरोवा विन्दून दद्यात दक्षिण नासापुटे सकृच्च संस्कृता नारी सर्वगर्भेषु संस्कृता। यं यं गर्भं प्रसूयेत स सर्व: संस्कृतो भवेत्[15]"॥

अर्थात् पुत्र प्राप्ति के लिए सुलक्षणा, वटशुंग, सहदेवी तथा विश्वेदेवि इनमें से अन्यतम औषधि के दुध के साथ घोंटकर उसके रस की तीन अथवा चार बुँद गर्भिणी के दाँए नासापुट में छोड़ना चाहिए

3. सीमन्तोन्नयनसंस्कार -

सीमन्तोन्नयन शब्द दो पदोंके योगसे बना है। सीमन्त और उन्नयन। इसका शाब्दिक अर्थ है- सीमन्त अर्थात केश और उन्नयन अर्थात् ऊपर उठाना। संस्कार विधि के समय पति अपनी पत्नी के केशों को संवारते हुए ऊपर की ओर उठाता था, इसलिए इस संस्कार का नाम सीमंतोन्नयनसंस्कार है। वीरमित्रोदय के अनुसार

–

"सीमन्त उन्नीयते यस्मिन् कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनमिति कर्मनामधेयम्[16]"।

आश्वलायन इस संस्कार कब करना चाहिए उसके लिए कहते है-

"चतुर्थे गर्भमासे सीमन्तोन्नयनम्। आपूर्यमापक्षे यदा पुंसा नक्षत्रेण चन्द्रमायुक्तः स्यात्[17]"।

---

[14] सुश्रुतम् 3.16

[15] हिन्द धर्म के षोलह संस्कार, पृष्ठ-58

[16] वीरमित्रोदय संस्कार, भाग, 1 पृष्ठा-172

[17] संस्कारविधिः, पृष्ठ- 40

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

स्मृतियों के अनुसार यह संस्कार षष्ठ अथवा अष्टम मास में करना चाहिए[18]। पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार भी यह संस्कार षष्ठ अथवा अष्टम मास में करना चाहिए-

'पुंसवनवत् प्रथमे गर्भे मासे षष्ठेऽष्टमे वा[19]'।

गर्भिणी के स्वास्थ्य के लिए विहित नियम हिन्दुओं के आयुर्वेदिक ज्ञान पर आधारित है। शुश्रुत संहिता पर लिखा है कि गर्भधारण के समय से स्त्री को मैथुन, श्रम, दिवाशयन, रात्रि जागरण, सवारी पर यात्रा, भय, रेचन, रक्तस्रवण, मलमूत्र का असामयिक स्थगन आदि से वचना चाहिये।

4. जातकर्मसंस्कार -

गर्भस्थ बालक के जन्म होने के बाद सबसे पहले जो संस्कार किया जाता है उसे जातकर्म संस्कार कहते है। इस संस्कार के सम्बन्ध में मनुस्मृति में कहा गया है कि-

"प्राङ्नाभिवर्धनात् पुंसो जातकर्म विधीयते।
मन्त्रवत्प्राशनञ्चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम्" ॥[20]

अर्थात् नवजात शिशुके नाभिच्छेदन से पहले मन्त्र उच्चारणपूर्वक सोना, घी, तथा मधु सम्मिश्रण करके प्राशन किया जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्कारविधि में इस संस्कार के विषय में कहते है- मन्त्रों से छह वार घृत-मधु प्राशन कराके तत्पश्चात् चावल और जव को शुद्ध कर पानी से पीस, वस्त्र से छान, एक पात्र में रखके हाथ के अंगुठा और अनामिका से थोड़ा से लेके- 'ओम् इदमाज्यमिदमन्नमिदमायुरिदममृतम्' - इस मन्त्र को बोलके बालक के मुख में एक विन्दु छोड़ दे[21]'। वर्तमान समाज में इस संस्कार के नाम पर विभिन्नप्रकार के रीतियाँ प्रचलित है। जैस पुत्रसन्तान जन्म होने से उनके घरवाले तवा, बाजे आदि बजाते है और लड़का होने पर चलनी आदि बजाते है।

---

[18] षष्ठेऽष्टमे वा सीमन्तः। याज्ञवल्क्यस्मृति 1.11

[19] संस्कारविधिः, पृष्ठ 40

[20] वीरमित्रोदय संस्कार भाग 1 पृ 183

[21] संस्कारविधिः पृष्ठ-45

ISBN : 978-81-19110-16-2

5. नामकरणसंस्कार-

जिस संस्कार के माध्यम से नवजात बालक को नाम रखा जाता है उसे नामकरण संस्कार कहते है। मनु ने लिखा है –

"नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यां वाऽस्य कारयेत्।
पुण्यतिथौ मुहुर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते[22]"॥

अर्थात् जन्म के दसवे वा वारहवे दिन में बालक का नामकरण संस्कार किया जाता है। उस दिन न होने पर शुभतिथि, मुहूर्त एवं गुणयुक्त नक्षत्र से नामकरण किया जाता है। स्मृतिसंग्रह में बताया गया है कि व्यवहार की सिद्धी, आयु, एवं ओजकी वृद्धिके लिए नाम करण संस्कार करना चाहीए-

"आयुर्वचोऽभिवृद्धिश्च सिद्धिव्र्यवह्यतेस्तथा।
नामकर्मफलं त्वेतत् समुदिष्टं मनीषिभिः[23]"॥

शिशु का नाम इष्टदेव या किसी विशिष्ट व्यक्ति के नाम पर रखने की प्रथा प्रचलित है। इसी प्रकार शिशु का गुह्य नाम रखने की परम्परा भी प्रचलित है। आचार्यों के मत में गुह्य नाम मानव के अन्तः करण से निहित होता है। इसलिए इसे विरोधी जनों से गोपनीय रखना चाहिए। नामकरण कैसे करे इस सम्बन्ध में आश्वलायन गृह्यसूत्र में लिखा है-

"नाम चास्मै दद्युः। घोषवदाद्यन्तरन्तःस्थमभिनिष्ठान्तं द्वयक्षरम्। चतुरक्षरं वा। युग्मानि त्वेव पुंसाम्। अयुजानि स्त्रीणाम्। अभिवादनीयं च समीक्षेत तन्मातापितरौ विदध्यातामोपनयनात्[24]"॥

नामकरण के काल के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती कहते है- जिस दिन जन्म हो उस दिन से लेके 10 दिन छोड़कर ग्यारहवें, वा एर सौ एकवें अथवा दुसरे वर्ष के आरम्भ में जिस दिन जन्म हुआ हो उसी दिन नाम रखे[25]। इसीप्रकार पारस्कर ने नामकरण का विधान इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

---

[22] मनुस्मृति 2/30

[23] https://www.mypanditg.com/learn-scientific-and-religious-reason-behind-naming-ceremony-of-new-born-baby/

[24] संस्कारविधि नामकरण प्रकरण, पृष्ठ 49

[25] संस्कारविधि नामकरण प्रकरण, पृष्ठ 49

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

"नाम द्वयक्षरं स्यात्, नामचतुरक्षरं स्यात्, नाम्न आदौ व्यञ्जनाक्षरं स्यात्, नाम्नि अर्धस्वरः स्यात्, नामान्ते दीर्घस्वरो विसर्गो वा स्यात्, नाम्नि कृत् प्रत्ययः स्यात्, तद्धित प्रत्ययो न स्यात्"।

आचार्य वैजवाप ने अक्षरों का प्रतिबन्ध न मानते हुये लिखा है – "पिता नाम करोति एकाक्षरं द्वयक्षरं त्र्यक्षरम् अपरिमिताक्षरं वा"[26]।

कन्या के नाम के विषय में पारस्कर का मत है कि कन्या का नाम आकारान्त व विषम अक्षरों में होना चाहिये। इसी प्रकार मनु ने कन्या के नाम के विषय में लिखा है –

"स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्पष्टार्थं मनोहरम्।

मङ्गल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत्"[27] ॥

अर्थात् कन्या का नाम ऐसा होना चाहिये जिसका सुख पूर्वक उच्चारण किया जा सके। जिसके शब्दों का अर्थ स्पष्ट हो। जो माङ्गलिक शब्दों से युक्त हो। जिसका अन्तिम वर्ण दीर्घ हो। जिन शब्दों से आशीष प्रकट हो आदि।

6. निष्क्रमणसंस्कार-

निष्क्रमण के अर्थ होता है बाहर निकलना। आचार्य वृहस्पति के अनुसार- 'अथ निष्क्रमणं नाम गृहात् प्रथमनिर्गमः[28] अर्थात् शिशु को प्रथमबार घर से बाहर ले जाने को निष्क्रमण संस्कार कहते है। दयानन्द के अनुसार निष्क्रमण संस्कार उसके कहते है कि जो बालक को घर से जहां का वायुस्थान शुद्ध हो, वहां भ्रमण कराना होता है। उसका समय जब अच्छा देखें तभी बालक को बाहर घुमावें[29]। संस्स आचार्य पारस्करजीने निष्क्रमणसंस्कारके सम्बन्ध में लिखते है –

---

[26] वीरमित्रोदय संस्कार भाग 1 पृष्ठ- 247

[27] मनुस्मृति 2/33

[28] संस्काररत्नमाला, पृष्ठ-886

[29] संस्कारविधिः, पृष्ठ- 53

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

"चतुर्थे मासि निष्क्रमणिका। सूर्यमुदीक्षयति तच्चक्षुरिति[30]"।

निष्क्रमण संस्कार के सम्बन्ध में मनु कहते है- "चतुर्थे मासि कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्" अर्थात् चौथे महिनेमें बालकको निष्क्रमण करना चाहिये[31]

गोभिल गृह्यसूत्र में एक अन्य मत भी प्रचलित है। वह मत है-

"जननादियास्तृतीयो ज्यैत्स्नस्तस्य तृतीयायाम्"[32]।

अर्थात् जन्म के पश्चात् तीसरे शुक्लपक्ष की तृतीया अथवा चौथे महिने में जिस तिथि में बालक का जन्म हुआ हो उस तिथि में संस्कार करना चाहिए।

7. अन्नप्राशन-संस्कार-

बालक को जन्म के पश्चात् प्रथम बार जब अन्न देने के लिये जो संस्कार किया जाता है उसे अन्नप्राशन संस्कार कहते है। जन्म से लेकर पाँच महिने तक बच्चे के केवल माँ के दुध दिया जाता है। उसके पश्चात् छठे महिने बालक शरीर के विकाश हो जाने पर जब अन्न की आवश्यकता प्रतीति होती है तब यह संस्कार किया जाता है। इस संस्कार को करने के सर्वोत्तम समय पारस्कर गृह्यसूत्रमें जन्म होने के छठा महिना बताया है [33]। व्यासस्मृति में भी पारस्कर गृह्यसूत्र के समर्थन करके अन्नप्राशन के समय छठा महिना कहा है[34]। सुश्रुतसंहिता में अन्नप्राशन संस्कार के समय के सम्बन्ध में कहते है कि छठे महिने में बालक को लघु और हितकर अन्न खिलायें[35]। डॉ. राजवली पाण्ड्ये ने हिन्दु संस्कार नामक पुस्तक में अन्नप्राशन संस्कार के सम्बन्ध में लिखा है- अन्नप्राशन संस्कार जन्म से छठा मासमें अथवा स्थगित होने पर आठवे, नवे, अथवा दसवे मास में करना चाहिए। किन्तु कतिपय पण्डितों के मतानुसार यह बारहवे मासमे अथवा एक वर्ष सम्पूर्ण

---

[30] पारस्कर गृह्यसूत्र- 1/17/5-6

[31] मनुस्मृति 2/34

[32] संस्कारविधि पृष्ठ-53

[33] पारस्कर गृह्यसूत्र 1/19/1

[34] षष्ठे मास्यन्नमश्नीयात्। व्यासस्मृतिः 1/18

[35] षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघुहितं च।सुश्रुतसंहिता, शारीरस्थान, 10/49

ISBN : 978-81-19110-16-2

होने पर भी किया जा सकता था[36]। इस संस्कार को करने उद्देश्य के सम्बन्ध में कहा गया है कि इस संस्कार करने से माता के आहार से गर्भावस्था में मलिनता-भक्षणजन्य जो दोष था , वह दोष शिशु में आ जाता है, वह दूर हो जाता है। दोष की निवृत्ति के हेतु पवित्र हविष्यान्न मधु, घी युक्त पायस बालक को दिया जाता है, जिसको ग्रहण करने से बालक का शरीर एवं अन्तःकरण दोषरहित होकर पवित्र हो जाता है।

8. चूडाकरणसंस्कार -

जिस संस्कार के माध्यम से बालक को जन्म के बालों को कटवाकर चूडा अथवा शिखा धारण करायी जाती है उसे चूड़ाकरण संस्कार कहते है। इसे मुण्डन-संस्कार भी कहते है। संस्कृत में चूड़ा शब्द के अर्थ शिखर अथवा चोटी। इस संस्कार सम्बन्ध में मनु कहते है-

"चूड़ाकर्म द्विजातीनां सर्वेषामेव धर्मतः।
प्रथमेऽब्दे तृतीये वा कर्तव्यं श्रुति चोदनात्[37]" ॥

अर्थात् प्रथम अथवा तृतीय वर्ष में बालक को प्रथमबार सिर का बाल उतारने के आयोजन को चूड़ाकर्म संस्कार कहते है। आयुर्वेदिक ग्रन्थों मे भी इस संस्कार के प्रयोजन की पुष्टि होती है। सुश्रुत के अनुसार केश, नख, लोम अथवा केशों के अपमार्जन छेदन से हर्ष, लाघव, सौभाग्य और उत्साह की वृद्धि तथा पाप का उपशमन होता है[38]। आचार्य चरक के मतमें-केश, श्मश्रु तथा नखों के काटने व प्रसाधन से पौष्टिकता, बल, आयुष्य, शुचिता और सौन्दर्य की प्राप्ती होती है[39]।

---

[36] हिन्दु संस्कार- डॉ. राजवली पाण्ड्ये, पृष्ठा- 115
[37] मनुस्मृति 2/35
[38] सुश्रुतसंहिता,चिकित्सास्थान, 24/72
[39] चरकसंहिता 5/15/102

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

इस संस्कार के काल के सम्बन्ध मे आश्वलायन तीसरे वर्ष में[40] तथा पारस्कर प्रथम वर्ष[41] में मानते है।

9. कर्णवेधसंस्कार -

जिस संस्कारसे बालक का कर्ण तथा बालिका की नासिका छेदन किया जाता है उसे कर्णवेध संस्कार कहते है। कर्णवेध संस्कार के विषय मे सुश्रुतसंहिता में कहा गया है -

"शङ्खोपरि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन सेवनीम्।

व्यत्यासद्वा शिरां विध्येदन्त्रवृद्धिनिवृत्तये"[42]॥

इस संस्कार के माध्यम से हाइड्रोसील नामक रोग से विमुक्ति मुक्त होना सम्भव है। यदि कोई विशेषज्ञ कान की नश को पहचान कर ठिक से छिद्र कर दे तो उक्त रोग नहीं होता है[43]। कात्यायन गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तृतीय अथवा पञ्चम वर्ष में किया जाना चाहिये-

"अथ कर्णवेधो वर्षे तृतीये पञ्चमे वा"[44]।

10. विद्यारम्भसंस्कार-

वच्चे को जब प्रथम शिक्षा दिया जाता था उसे विद्यारम्भसंस्कार कहते है। विभिन्न शास्त्रकारों ने अक्षर आरम्भ, अक्षर लेखन आदि नामों से उल्लेख किया है। प्रथम शिक्षा माता पिता के द्वारा ही होते है। गुरुगृह में जाने के लिये कम से कम आठ वर्ष था जबकि वच्चा गायत्री समझने योग्य हो जाये। उससे पहले ही वच्चे को कुछ साधारण ज्ञान देने के प्रक्रिया के लिये यह संस्कार किया जाता है।

---

[40] तृतीये वर्षे चौलम्, आश्वलायन गृह्यसूत्र, 1/17/1
[41] सांवत्सरिकस्य चूडाकरणम्, पारस्कर गृह्यसूत्र 2/1/1
[42] सुश्रुतसंहिता,चिकित्सास्थान 11/21
[43] षोडश संस्कार (एक वैज्ञानिक विवेचन), पृष्ठ 15-16
[44] अथर्ववेद 6.68.1/3

ISBN : 978-81-19110-16-2

यह संस्कार तीसरे वर्ष अथवा पाँचवे वर्ष में होता है। सूर्य के उत्तरायण होने पर किसी भी शुभदिवस में सम्पन्न किया जाता है। बालक को स्नान आदि कराने के पश्चात् सुन्दर वस्त्र पहनाकर गणेशादि विभिन्न देवता के पुजा करायी जाती है उसके वाद विद्यारम्भ कराता है।

11. उपनयनसंस्कार -

उपनयन शब्द उप् उपसर्गपूर्वक नी धातुसे ल्युट् प्रत्यय करनेपर निष्पन्न होता है। उप अर्थात् आचार्यके समीप, नयन शब्द 'नीयते अनेन इति नयनम्' व्युतपत्ति करके बनते है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार - बालकको विद्या अध्ययन के लिए आचार्य के समीप ले जाने को उपनयन संस्कार कहा गया है। यह संस्कार वहुत महत्वपूर्ण है। बिना उपनयन कराये कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विज नहीं हो सकता है। मनुस्मृति में मनु ने इसके बारे में जो विचार स्पष्ट किया है उसे राजबली पाण्ड्ये जी ने अपनी पुस्तक में दिया है – जन्मना जायते शूद्र संस्काराद् द्विज उच्यते। अर्थात् जन्म से प्रत्येक व्यक्ति शुद्र होता है, उपनयन से वह द्विज कहलाता है। इस संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार भी कहते है। इस संस्कार उल्लेख वैदिककाल में अनेक स्थानों पर किया गया है। ब्राह्मणकाल तक आते आते उपनयन की विधि पूर्णरूपेण कर्मकाण्डी हो गई थी। आश्वलायन और पारस्कर गृह्यसूत्रों में उपनयन का तात्पर्य था, आचार्य के समीप जाकर ब्रह्मचर्य जीवन में प्रवेश करना। आचार्य पारस्कर के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के लिये क्रमसे जन्मके 8, 11 और 12 वर्ष में उपनयन करना चाहिए-

अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेद् गर्भाष्टमे वा। एकादशवर्षं राजन्यम्। द्वादशवर्षं वैश्यम्[45]"।

यदि किसी कारणवश मुख्यकालमे यज्ञोपवीत-संस्कार न हो सका तब उस स्थिति में ब्राह्मण का 16, क्षत्रिय का 22, वैश्य का 24 वर्ष तक उपनयन संस्कार करना चाहिए। -

"आषोडशाद्वर्षाद् ब्राह्मणस्यानतीतः कालो भवति।
आद्राविंशाद्राजन्यस्य। आचतुर्विंशद्वैश्यस्य[46]" ॥

---

[45] पारस्कर गृह्यसूत्र- 2/2/1

[46] पारस्कर गृह्यसूत्र- 2/5/36-38

ISBN : 978-81-19110-16-2

यही समय मनुस्मृति भी निर्धारित किया गया है[47]। इस संस्कार के बाद जनेऊ पहना जाता है तथा अनेक नियमों को पालन करना पड़ता है।

12. वेदारम्भसंस्कार-

जिस संस्कार के माध्यम से वेद के ज्ञानार्जन के लिए संस्कार किया जाता है उसे वेदारम्भसंस्कार कहते है। वेदारम्भ और उपनयन संस्कार में बहुत् ज्यादा अन्तर नही है। उपनयन संस्कार गृह में किया जाता है लेकिन वेदारम्भ संस्कार गुरुकूल में किया जाता है। प्रायः उपनयन संस्कारके ही दिन वेदारम्भ संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के सर्वप्रथम उल्लेख व्यासम्तृति में मिलता है। किसी किसी को मानना था कि वेदारम्भ संस्कार उपनयन के पश्चात् किसी शुभ दिन देखकर किया जाना चाहिए। इस संस्कार के सम्पन्न होने के पश्चात् आचार्य ब्रह्मचारी वेद के शिक्षा देने प्रारम्भ करता था।

13. केशान्तसंस्कार-

जिस संस्कार के माध्यम से प्रथमबार दाढ़ी-मूछ का कर्तन किया जाता है उसे केशान्त संस्कार कहते है। सुश्रुत एवं चरक नें केश एवं श्मश्रु कर्तन को हर्ष, लाघव, सौभाग्य उत्साह, पौष्टिकता एवं आयुष्य के साधन माना गया है। सुश्रुत के अनुसार—केश, नख, लोम अथवा केशों के अपमार्जन छेदन से हर्ष, लाघव, सौभाग्य और उत्साह की वृद्धि तथा पाप का उपशमन होता है—

"पापोपशमनं केशनखरोमापमार्जनम्।

हर्षलाघव सौभाग्यकरमुत्साहवर्धनम्[48]"॥

आचार्य चरक का मत है कि केश, श्मश्रु तथा नखों के काटने व प्रसाधन से पौष्टिकता, बल, आयुष्य, शुचिता और सौंदर्य की प्राप्ति होती है।

"पौष्टिकं वृष्यमायुष्यं शुचिरूपं विराजनम्।

---

[47] मनुस्मृति 2/36

[48] सुश्रुतसंहिता, चिकित्सास्थान 24/72

ISBN : 978-81-19110-16-2

केशश्मश्रुनखादीनां कर्तनं सम्प्रसाधनम्[49]"॥

मनु के अनुसार केशान्तसंस्कार ब्राह्मण के 16 क्षत्रिय के 22 और वैश्य के 24 वर्ष में केशान्त कर्म अथवा क्षौर मुंडन हो जाना चाहिए[50]। आजकल इस संस्कार का आयोजन नहीं किया जाता है।

14. समावर्तन संस्कार-

समावर्तन का सामान्य अर्थ है- गुरुकुलसे विद्याध्ययन के पश्चात् छात्र के घर वापस आने के समय यह संस्कार किया जाता है। वीरमित्रोदय में समावर्तन संस्कार के सम्बन्ध में कहा है-

"तत्र समावर्तनं नाम वेदाध्ययनान्तरं गुरूकुलात् स्वगृहागमनम्"[51]।

अर्थात् वेद अध्ययन के पश्चात् गुरुकुल से घर की प्रस्थान करने को समावर्तन संस्कार कहते है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार समावर्तनसंस्कार उस को रहते हैं कि जिस में ब्रह्मचर्यव्रत, साङ्गोपाङ्ग वेदविद्या, उत्तमशिक्षा और पदार्थविज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त होके विवाह विधानपूर्वक गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़के घर की ओर आना[52]। मनु इस संस्कारके विषय में कहते है-

"वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वाऽपि यथाक्रमम्।
अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत्"[53] ॥

समावर्तन संस्कार के पूर्व शिष्य के गुरु के समीप में अनुमति लेना आवश्यक था। विद्यार्थी अपने सामर्थ्य के अनुसार को दक्षिणा भी प्रदान करता था तथा गुरू के अनुमति से अपने घर आकर वह सवर्ण, सुलक्षणा कन्या से विवाह सम्पन्न करता था। इस सम्बन्ध में मनु कहते है-

"गुरुणाऽनुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि।

---

[49] चरकसंहिता 5/15/102

[50] केशान्तः षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते।
राजन्यबन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्व्यधिके मतः। मनुस्मृति 2/40

[51] वीरमित्रोदय संस्कार, भाग , पृष्ठ 564

[52] संस्कारविधिः, पृष्ठ- 90

[53] मनुस्मृति 3/2

ISBN : 978-81-19110-16-2

उद्वहेत द्विजो भार्या सवर्णा लक्षणान्विताम्[54]" ॥

अर्थात् गुरू की आज्ञा से स्नान कर गुरूकुल से अनुक्रम पूर्वक आके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने वर्णानुकूल सुन्दरलक्षण युक्त कन्या से विवाह करे। वर्तमान में यह संस्कार विश्वविद्यायों में स्नातक, स्नातकोत्तर, पिएचडि आदि उपाधि प्रदान के लिए समावर्तन समारोह के आयोजन करते है।

15. विवाहसंस्कार-

समावर्तन संस्कारके पश्चात विवाह संस्कार होता है। विवाह अर्थात् विशिष्ट ढंग से कन्या को ले जाने को कहते है। बालक समावर्तन संस्कार सम्पन्न करके के पश्चात् जब गृह वापस आकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश के लिये शादी करता है उसे ही विवाहसंस्कार कहता है। मनुस्मृति के अनुसार विवाह आठ प्रकारके होते है। वे कुछ इस प्रकार हैं :-

"ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।

गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः" [55]।

अर्थात् ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर गान्धर्व, राक्षस और पैशाच ये विवाह आठ प्रकार के होते हैं।निम्न में आठप्रकारके विवाह संक्षेप में बता रहा हुं-

1. ब्राह्म विवाह :

"आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतशीलवते स्वयम्।

आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः[56]"।।

अर्थात् जिस विवाह में कन्या का पिता किसी विद्वान् तथा सदाचारी वर को स्वयं आमंत्रित करके उसे वस्त्र अलङ्कारों से सुसज्जित कन्या, विधि- विधान सहित प्रदान करता था उसे ब्राह्म विवाह कहते है।

---

[54] मनुस्मृति 3/4
[55] मनुस्मृति 3/21
[56] मनुस्मृति 3/27

ISBN : 978-81-19110-16-2

2. दैव विवाह :

"यज्ञे तु वितते सम्यगृत्विजे कर्म कुर्वते।
अलङ्कृत्य सुतादानं दैवं धर्मं प्रचक्षते[57]"।।

अर्थात् जब कन्या पिता के द्वारा यज्ञ आदि करने वाले अविवाहित ऋत्विज अथवा अध्वर्यु युवक को प्रदान करती है तब उसे दैव विवाह कहते हैं।

3. आर्ष विवाह :

"एकं गोमिथुनं द्वे वा वरादादाय धर्मतः।
कन्याप्रदानं विधिवदार्षो धर्मः स उच्यते[58]"।।

अर्थात् जब कन्या को शास्त्र विधि से एक या दो गाय उपहार स्वरूप देकर विवाह सम्पन्न कराते हुये योग्य वर को प्रदान किया जाता है, तब उसे आर्ष विवाह कहते हैं।

4. प्राजापत्य विवाह :

"सहोभौ चरतां धर्मं इति वाचानुभाष्य च।
कन्याप्रदानं अभ्यर्च्य प्राजापत्यो विधिः स्मृतः[59]"।।

अर्थात् जब पिता भलीभांति अलंकृता तथा अर्चिता अर्थात् सम्मानित कन्या को शास्त्र विधि से विवाह क्रिया सम्पन्न कराने के पश्चात् आशीर्वचन के साथ विदा करते हैं और कहते है कि तुम दोनों धर्म का आचरण करते हुये साथ रहो, तब उसे प्राजापत्य विवाह कहा जाता है।

5. आसुर विवाह :

---

[57] मनुस्मृति 3/28
[58] मनुस्मृति 3/29
[59] मनुस्मृति 3/30

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-16-2

"ज्ञातिभ्यो द्रविणं दत्त्वा कन्यायै चैव शक्तितः।
कन्याप्रदानं स्वाच्छन्द्यादासुरो धर्म उच्यते[60]"।।

अर्थात् जब ज्ञातिजनों को अर्थात् कन्या के पिता, चाचा इत्यादि को धन देकर कोई विवाह यज्ञ सम्पन्न किया जाता है तब उसे आसुर विवाह कहते हैं।

6. गांधर्व विवाह :

"इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्च वरस्य च।
गान्धर्वः स तु विज्ञेयो मैथुन्यः कामसंभवः[61]"।।

अर्थात् जब कन्या और वर यानी अविवाहित कन्या और अविवाहित युवक अपनी इच्छा से परस्पर संयोग करते हैं और कामभाव से भरकर जोड़ी बनाते हैं यानी मिथुनकर्म करते हैं तो उसे गांधर्व विवाह कहा जाता है।

7. राक्षस विवाह :

"हत्वा छित्त्वा च भित्त्वा च क्रोशन्तीं रुदन्तीं गृहात्।
प्रसह्य कन्याहरणं राक्षसो विधिरुच्यते[62]"।।

अर्थात् हनन, छेदन अर्थात् कन्या के रोकने वालों का विदारण कर क्रोशती, रोती, कंपती और भयभीत हुई कन्या को बलात्कार हरण करके जब विवाह किया जाता है तब वह विवाह राक्षसविवाह कहा जाता है।

8. पैशाच विवाह :

"सुप्तां मत्तां प्रमत्तां वा रहो यत्रोपगच्छति।
स पापिष्ठो विवाहानां पैशाचश्चाष्टमोऽधमः"[63]।।

अर्थात् जो सोयी हुई, पागल अथवा नशे में डूबी हुई स्त्री को एकांत पाकर दूषित कर विवाह करने को पैशाच विवाह कहते है। आठों

---

[60] मनुस्मृति 3/31
[61] मनुस्मृति 3/32
[62] मनुस्मृति 3/33
[63] मनुस्मृति 3/34

ISBN : 978-81-19110-16-2

प्रकार के विवाहों में सबसे अधम तथा निकृष्ट विवाह है वह पैशाचिक विवाह।

16. अन्त्येष्टिसंस्कार-

अन्त्येष्टि शब्दमें दो शब्द है अन्त्य और इष्टि इन दोनों को मिलाके अन्त्येष्टि बनता है। अन्त्य = अन्तिम और इष्ट = यज्ञ। सामान्यरूपसे मृत्युके अनन्तर कीया जाने वाला संस्कार अंत्येष्टिसंस्कार कहलाता है । इस संस्कार के सम्बन्ध में दयानन्द सरस्वती कहते है- अन्त्येष्टि कर्म उस को कहते हैं कि जो शरीर के अन्त का संस्कार है, जिस के आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। इसी को नरमेध, पुरुषमेध, नरयाग, पुरुषयाग भी कहते है। संस्कारचन्द्रिका में अन्त्येष्टि संस्कार सम्बन्ध में कहते है कि अन्त्येष्टि कर्म उसको कहते है जो शरीर के अन्त का संस्कार है। जिसके आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है[64]। मनुस्मृति में आदिम संस्कार निषेक और अन्तिम संस्कार श्मशान बताया है[65] । याज्ञवल्क्यस्मृतिमें बताया गया है कि गर्भाधान से लेकर श्मशान तथा अन्त्येष्टि कर्म तक द्विजमात्र के सभी संस्कार वेद-मन्त्रों के द्वारा ही होते हैं। संस्कार से मनुष्य द्विजत्व को प्राप्त होता है।

उपसंहार-

इसप्रकार से हमारे प्राचीन भारतीय ऋषियों ने समाज को सूचारूरूप से चलाने के लिए संस्कारों के विधान दिया गया है। लेकिन आज के आधुनिक समाज के मनुष्य इन विधि विधानों के अन्धविश्वास मानकर नजर अन्दाज करते है। इसलिए वर्तमान मे अधिकतर संस्कार लोप हो गया है। षोड़श संस्कारों में प्राग्जन्म संस्कार के प्रचलन साधारण जनसमाज में लुप्त हो गया है। जन्म के पश्चात् होनेवाले संस्कारों जातकर्म, नामकरण संस्कार नर्सिं होम में कर दिया जाता है। अन्नप्राशन संस्कार को उत्सव के रूप में पालन हो रहा है। मुण्डन, कर्णवेध आदि संस्कार भी लुप्त हो गये है। शैक्षणिक संस्कारों समावर्तन संस्कार केवल उपाधि प्राप्त के प्रयोग होता है। विवाहसंस्कार और अन्त्येष्टि संस्कार प्रचलित है लेकिन शास्त्रीय कोई महत्व नहीं रहा है। वर्तमान में संस्कारों के शास्त्रीय महत्व भूलकर

---

[64] संस्कारचन्द्रिका, पृष्ठ-298

[65] निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः।
तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिञ् ज्ञेयो नान्यस्य कस्य चित्॥ मनुस्मृति 2/16

ISBN : 978-81-19110-16-2

मौज मस्ति मानकर संस्कार के पालन के उद्देश्य हो गया है। यदि हम इस संस्कारों के अपने जीवन में लाकर नियमबद्ध और सामाजिक जीवन जीना सिख लेने से निश्चितरूप से कह सकते है कि हम हम बहुत उच्चकोटिक जीवन प्राप्त कर सकते है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची-

- डॉ., सुबोध कुमार झा, पं. गेय कुमार झा. षोड़श संस्कार. जयपुर: हंसा प्रकाशन, 1997.
- पाण्ड्ये, डॉ. राजबली. हिन्दु संस्कार. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, 1957.
- शास्त्री, हरगोविन्द. मनुस्मृति. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सिरीज, n.d.
- शुक्ल, सच्चिदानन्द. हिन्दु धर्म के षोलह संस्कार. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, n.d.
- सरस्वती, दयानन्द. संस्कारविधिः . दिल्ली: आर्ष साहित्य प्रचार ट्रष्ट, 2010.
- सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द. संस्कारभाष्कर. बम्बइ: इन्टरनेशनल आर्यन फाउन्डेशन, 1995.
- सिद्धान्तलङ्कार, सत्यव्रत. संस्कारचन्दिका. नई दिल्ली: विजयकृष्ण लखनपाल, 2011.
- https://www.mypanditg.com/learn-scientific-and-religious-reason-behind-naming-ceremony-of-new-born-baby/ Date-10.04.2023

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर : जीवन और संघर्ष

सम्पादक : प्रहलाद सिंह अहलूवालिया

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission
Book Chapter As
Per UGC Guideline

Scanned with OKEN Scanner

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर : जीवन और संघर्ष

सम्पादक : प्रहलाद सिंह अहलूवालिया

प्रकाशक :- शोध प्रकाशन

प्रकाशक का पता :- हिसार(हरियाणा)

ISBN : 978-81-19110-33-9

प्रिंटर :- खालसा प्रिंटर

संस्करण :- प्रथम (2023)

कॉपीराइट :- शोध प्रकाशन, हिसार

(लेख में दिए विचार लेखकों के अपने विचार है। इसके लिए प्रकाशक या सम्पादक जिम्मेदार नहीं है। विवाद के क्षेत्र में न्याय क्षेत्र हिसार, हरियाणा होगा।)

ISBN : 978-81-19110-33-9

7.	डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी का जीवन में संघर्ष व 18 मार्च 1956 को भाषण में कहा पूछे पढ़े लिखे लोगों ने धोखा दिया की समीक्षा डॉ सतीश चौहान	90-95
8.	बाबा साहेब डॉ आंबेडकर : जीवन और संघर्ष शैलेश कुमार	96-101
9.	बाबा साहेब का जीवन और संघर्ष डॉ. आशालता नायडू	102-104
10.	बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन संघर्ष और वैचारिकी डॉ. श्वेता शरण	105-111
11.	संविधान शिल्पी - बाबा साहब नन्द लाल मणि त्रिपाठी पीताम्बर	112-125
12.	डॉ. भीमराव आंबेडकर : एक दार्शनिक प्रहलाद सिंह अहलूवालिया	126-138
13.	भारतीय वर्णव्यवस्था और अम्बेडकर का चिन्तन परिमल मण्डल	139-147
14.	बुद्ध शिक्षा र अम्बेडकरवाद कमला हेमचुरी	148-161
15.	डॉक्टर बाबा भीमराव अंबेडकर, उनका जीवन संघर्ष कुन्ती हरिराम झांसी	162-167

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-19110-33-9

भारतीय वर्णव्यवस्था और अम्बेडकर का चिन्तन

परिमल मण्डल, सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग
स्वर्णमयी योगेन्द्रनाथ महाविद्यालय
नन्दीग्राम, पूर्व मेदिनीपुर

भुमिका

भारतीय प्राचीन परम्परा में वर्णाश्रम व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। यह लौकिक जीवन से ऊपर उठकर पारलौकिक जीवन को अधिक महत्व प्रदान करता है। वर्णाश्रम दो शब्दों से मिलकर बना है वर्ण तथा आश्रम। इनमें से वर्ण को सामाजिक व्यवस्था, समृद्धि और सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए समाज को कार्यात्मक रूप से चार स्तरों में वर्गीकृत किया। वे चार वर्ण है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जबकि आश्रम व्यवस्था में व्यक्ति के जीवन को चार भागों में वर्गीकृत संबंधित धारणा है। इसमें मनुष्यों के व्यक्तिगत जीवन को समुन्नत करने के लिये सम्पूर्ण जीवन यात्रा के चार स्तरों (आश्रमों) में विभाजित कर दिया गया है। वे चार आश्रम है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, और सन्यास। प्राचीन सनातन ऋषियों ने वर्ण व्यवस्था का विधान इसलिये दिया है जिससे समाज के प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने निर्दिष्ट कर्तव्यों का पालन करते हुए आपसी मतभेदों एवं वैमनस्य से मुक्त होकर अपना तथा समाज का पूर्ण विकास में सहयोग दे सके। यह सामूहिक पद्धति से व्यक्ति के उन्नति की योजना है जो भारतीय समाज की निजी व्यवस्था है। इसके द्वारा समाज में रहते हुए व्यक्ति परिवार, समुदाय, समाज तथा

সাহিত্য, সমাজ ও সংস্কৃতি

সম্পাদনা
পরিমল মন্ডল
রঞ্জন মাহাতি

Scanned with OKEN Scanner

Sahitya, Samaj O Sanskriti

Edited by

Parimal Mandal

&

Ranjan Mahata

প্রথম প্রকাশ: জুন, ২০২৩

© কগনিশ্‌ন পাবলিকেশনস্‌

প্রকাশক

অরেন্স মহালদার

কগনিশ্‌ন পাবলিকেশনস্‌ (Cognition Publications)

পশ্চিম সপ্তগ্রাম, বিশরপাড়া, বিরাটি, কলিকাতা-৭০০০৫১

http://cognitionpublications.com/

E.Mail: cognitionpublications@gmail.com

ফোন: +৯১ ৭০৪৪৭৭২৩৯২

ISBN : 978-93-92205-32-3

মুদ্রক: এস পি কমিউনিকেশনস্‌ প্রাঃ লিঃ, কলিকাতা-৭০০০০৯

প্রচ্ছদচিত্রঃ সৈকত মজুমদার

মূল্য: ৪৭৫ টাকা

Scanned with OKEN Scanner

সূচিপত্র

প্রথম অধ্যায়: ভারতীয় সমাজে মহিলাদের অধিকার ও অবস্থান
মৌসুমি কুন্ডু ..... পৃষ্ঠা ১৫

দ্বিতীয় অধ্যায়: নারী ক্ষমতায়ন: সেকাল ও একাল
পিয়া সিন্হা ..... পৃষ্ঠা ২২

তৃতীয় অধ্যায়: সমাজতত্ত্বের মনস্তত্ত্বে নারীত্বের নবমূল্যায়ন —
Bengali Fiction: "Ragged end"
শুভেন্দু ঘোষ ..... পৃষ্ঠা ৩২

চতুর্থ অধ্যায়: মধ্যযুগে বাংলা সাহিত্যে বঙ্গনারীর সামাজিক অবস্থান
সুরজিৎ মন্ডল ..... পৃষ্ঠা ৩৭

পঞ্চম অধ্যায়: বিবাহ: নারীর স্বতন্ত্র সত্তার পরিপন্থী
তাপস দাস ..... পৃষ্ঠা ৪৭

ষষ্ঠ অধ্যায়: বৈবাহিক সম্পর্ক ও তার স্থায়ীত্বের সঙ্কট: একটি সমাজতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ
সুদেষ্ণা মিত্র ..... পৃষ্ঠা ৫৮

সপ্তম অধ্যায়: সংস্কৃতসাহিত্যে ভারতীয় সমাজব্যবস্থা ও সংস্কৃতির স্বরূপ
অপূর্ব গরাই ..... পৃষ্ঠা ৭১

অষ্টম অধ্যায়: সাহিত্য — সমাজ — সংস্কৃতির আদর্শে বিভূতিভূষণ ও তাঁর ইছামতীর সমাজ ও সংস্কৃতি
প্রেমাঙ্কুর মিশ্র ..... পৃষ্ঠা ৭৭

নবম অধ্যায়: নলিনী বেরার কথাসাহিত্যে সমাজ চেতনা
পিন্টু সাইনি ..... পৃষ্ঠা ৮৫

দশম অধ্যায়: প্রাত্যহিক জীবনে শ্রীমদ্ভগবৎগীতার প্রাসঙ্গিকতা
নন্দিতা বারুই ..... পৃষ্ঠা ৯৮

Scanned with OKEN Scanner

একাদশ অধ্যায়: শ্রীমদ্ভগবদ্গীতোক্ত ভক্তিযোগ ও বর্তমান সময়ে তার প্রাসঙ্গিকতা: একটি পাঠবিমর্শ
শ্রীরামস্বরূপ মুখার্জী ..... পৃষ্ঠা ১০৭

দ্বাদশ অধ্যায়: মূল্যবোধের অবক্ষয় ও নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়ের কয়েকটি ছোটগল্প
মধুমিতা বসু ..... পৃষ্ঠা ১১৫

ত্রয়োদশ অধ্যায়: মহাশ্বেতা দেবীর ছোটগল্পে পশ্চিম রাঢ়ের গ্রাম জীবন
দীপঙ্কর সরকার ..... পৃষ্ঠা ১২৫

চতুর্দশ অধ্যায়: উপজাতিদের মধ্যে সামাজিক বিচলন — প্রসঙ্গ পশ্চিমবঙ্গ
দেবাশীষ সরকার ..... পৃষ্ঠা ১৩১

পঞ্চদশ অধ্যায়: ভারতীয় উপজাতীদের স্বাস্থ্য এবং স্বাস্থ্যসংক্রান্ত বিশ্বাস: একটি সাহিত্য পর্যালোচনা
সঞ্জিত দেবনাথ ..... পৃষ্ঠা ১৪০

ষষ্ঠদশ অধ্যায়: বিশ্বায়নের কালে সাহিত্য পড়া ও পড়ানো
দূর্বা বসু ..... পৃষ্ঠা ১৫০

সপ্তদশ অধ্যায়: বাণেশ্বর বিদ্যালঙ্কারের সারস্বত অবদান
প্রদীপ কুমার মহাপাত্র ..... পৃষ্ঠা ১৫৫

অষ্টাদশ অধ্যায়: সায়ণাচার্যের বেদব্যাখ্যা পদ্ধতি: একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা
মানবেন্দু সরকার ..... পৃষ্ঠা ১৬৫

ঊনবিংশ অধ্যায়: মৃচ্ছকটিকে বৈদিকতত্ত্বানুসন্ধান: একটি সমীক্ষা
মধুমিতা ঘোষ ..... পৃষ্ঠা ১৭২

বিংশ অধ্যায়: সলিমুল্লাহ খানের 'উৎসর্গ: পরিবার প্রজাতি রাষ্ট্র'
মুহাম্মদ ইসহাক ..... পৃষ্ঠা ১৮৫

একবিংশ অধ্যায়: পুঁথি বিশারদ অক্ষয়কুমার কয়াল
দীপঙ্কর নস্কর ..... পৃষ্ঠা ১৮৯

দ্বাবিংশ অধ্যায়: মানুষ তবুও ঋণী পৃথিবীরই কাছে: জীবনানন্দের কবিতা
সুরজিৎ প্রামাণিক ..... পৃষ্ঠা ২০৫

ত্রয়োবিংশ অধ্যায়: অন্নদামঙ্গল কাব্য: শিল্পের রূপ ও রূপান্তর
অন্তরা ব্যানার্জী ..... পৃষ্ঠা ২১৮

চতুর্বিংশ অধ্যায়: মানবশরীর গঠনে পঞ্চমহাভূত এবং প্রাচীন ভারতের আয়ুর্বেদশাস্ত্র – একটি সংক্ষিপ্ত অধ্যয়ন
স্বপন বিশ্বাস ..... পৃষ্ঠা ২২৭

পঞ্চবিংশ অধ্যায়: ধর্মশাস্ত্রীয়নিবন্ধগ্রন্থে দানপরম্পরা – একটি সংক্ষিপ্ত সমীক্ষা
রঞ্জন মাহাত এবং পরিমল মন্ডল ..... পৃষ্ঠা ২৩৫

ষড়্বিংশ অধ্যায়: হরিশংকর জলদাসের 'কুন্তীর বস্ত্রহরণ': সংখ্যালঘু উন্মূল মানুষের জীবনালেখ্য
আব্দুল সামাদ ..... পৃষ্ঠা ২৪১

লেখক পরিচিতি ..... পৃষ্ঠা ২৫২

উপদেষ্টা মন্ডলী ..... পৃষ্ঠা ২৬৩

Scanned with OKEN Scanner

ধর্মশাস্ত্রীয়নিবন্ধগ্রন্থে দানপরম্পরা — একটি সংক্ষিপ্ত সমীক্ষা

রঞ্জন মাহাত

এবং

পরিমল মন্ডল

সারসংক্ষেপ: বৈদিক রীতিনীতি কালক্রমে মানুষের নিকট জটিল হওয়ার ফলে ধর্মশাস্ত্র একটু হয়ে ওঠে। ঋষিদ্বারা প্রণীত স্মৃতিগ্রন্থ সংখ্যায় অনেক। সেগুলিতে বর্ণিত বিষয় এবং সিদ্ধান্তের মধ্যে কোনো পার্থক্য লক্ষিত হয় না বরং কোথাও কোথাও বিরোধাভাসের অশঙ্কা জন্মায়। অতএব এই অশঙ্কার নিবারণের হেতু বিভিন্নগ্রন্থে প্রতিপাদিত বিষয়গুলির সংকলন করার দৃষ্টিকোণ থেকেই নিবন্ধসাহিত্যের পরম্পরা প্রচলিত। ধর্মশাস্ত্রীয় বচনগুলির একত্র সংগ্রহ এবং সন্দেহের নিরবসানের ক্ষেত্রে মহত্ত্বপূর্ণ ভূমিকা থাকার জন্য এদের নির্ণয়গ্রন্থও বলা যেতে পারে। নিবন্ধসাহিত্যের পরম্পরা ভারতের বিভিন্ন প্রান্তের রাজা মহারাজাদের সংরক্ষণে, বহু বিদ্বানদের সহযোগে প্রচলিত ছিল। বিভিন্ন লেখকের দ্বারা ধর্মশাস্ত্রনির্মাণের জন্য ধর্মসম্পাদন হেতু প্রযত্ন করেছেন। দেশ কালের অনুসারে বুঝবার, বোঝাবার প্রক্রিয়ার মধ্যে পার্থক্য লক্ষ্য করা যায়। যার কারণে বিভিন্ন ধর্মশাস্ত্র, নিবন্ধগ্রন্থ প্রভৃতি গ্রন্থের রচনার আবশ্যকতা অনুভূত হয়। এই দানসাহিত্যসম্বন্ধীয় নিবন্ধগ্রন্থ এবং তাদের রচনাকর্তা সম্বন্ধে আলোচনা সংক্ষিপ্তভাবে নিম্নে প্রদর্শনের চেষ্টা করা হচ্ছে।

মূল শব্দ: দান, বেদ, মহাভারত, ধর্মশাস্ত্র, দানবিষয়ক গ্রন্থ।

বেদ হল ভারতীয় সংস্কৃতির স্তম্ভস্বরূপ। প্রাচীন ভারতীয় সংস্কৃতির ধারক ও বাহক হল বেদ। যা ঋষিগণ তাঁদের স্বাচরিততপোবলের মাধ্যমে লাভ করেছিলেন। সেই নির্মল, নিখিল শব্দরাশিরূপ বেদরাশির সরল শব্দবোধের জন্য পুরাণ, নিরুক্ত এবং ধর্মশাস্ত্রের প্রয়োজন প্রাচীন কাল থেকে চলে আসছে। এই ধর্মশাস্ত্রের অপর নাম স্মৃতি। কারণ বেদমূলক বিধিই স্মৃতির মাধ্যমে প্রকাশিত হয়। তাই মনুসংহিতায় বলা হয়েছে-

শ্রুতিস্তু বেদো বিজ্ঞেয়ো ধর্মশাস্ত্রং তু বৈ স্মৃতিঃ। । মনু-২.১০

সমাজ ও জীবনের ধর্মানুগ কর্তব্য নিয়ন্ত্রিত করেছে ঋষিপ্রণীত স্মৃতির অনুশাসন। স্মৃতি ও ধর্মশাস্ত্রের ইতিহাসে ধর্মসূত্র, স্মৃতিসংহিতাও সর্বশেষে নিবন্ধসাহিত্যের বিশেষ ভূমিকা আছে। ধর্মসূত্রের উদ্ভব হয় বৈদিক সংস্কৃতির সঙ্গে সম্পর্কিত বেদাঙ্গ সাহিত্যের যুগে। বেদোক্ত ক্রিয়াকলাপের পরিপাটি রচিত হয়েছে কল্পসূত্রে। কল্পসূত্র হল অন্যতম বেদাঙ্গসূত্র- শ্রৌত, গৃহ্য, ধর্ম, শুল্ব ভেদে চার প্রকার। পাণিনীয় শিক্ষায় কল্পসূত্রকে বেদপুরুষের হাত কল্পনা করে বলা হয়েছে-

Scanned with OKEN Scanner

সাহিত্য, সমাজ ও সংস্কৃতি

পরিমল মন্ডল

ড. পরিমল মন্ডল — স্বর্ণময়ী যোগেন্দ্রনাথ মহাবিদ্যালয়ের সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধান এর দায়িত্ব পালন করছেন। তিনি মালদা কলেজ থেকে 2012 সালে সংস্কৃত বিষয়ে স্নাতক, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2014 সালে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর, এবং পণ্ডিচেরী বিশ্ববিদ্যালয় থেকে 2020 সালে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার পুথি সম্পাদনায় পিএইচডি উপাধি প্রাপ্ত করেন। বর্তমানে যে বিষয়গুলিতে তাঁর গবেষণার আগ্রহ তা হলো আঞ্চলিক সাহিত্য ও সংস্কৃতি চর্চা, বেদান্ত, পুথিবিদ্যা, অনুবাদ ও অনুবাদতত্ত্ব ইত্যাদি। তিনি সদ্য কয়েকমাস আগে সাহিত্য, সমাজ এবং সংস্কার নামক একটি হিন্দী ভাষায় পুস্তক সংকলন করেছেন। সেটি প্রকাশিত হয়েছে শোধ প্রকাশন, হিসার থেকে। এছাড়া তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রিকায় লেখালেখি করে থাকেন।

রঞ্জন মাহাত

শ্রী রঞ্জন মাহাত — পুরুলিয়া জেলার হুড়া থানার অন্তর্গত আলোকডি নামক গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। বিগত ৬ বছর যাবৎ তিনি হুগলী জেলার কবিকঙ্কণ মুকুন্দরাম মহাবিদ্যালয়ের অন্তর্গত সংস্কৃত বিভাগের সহকারী অধ্যাপক এবং বিভাগীয় প্রধানের দায়িত্ব পালন করে চলেছেন। তিনি পুরুলিয়া জেলার জগন্নাথ কিশোর মহাবিদ্যালয় থেকে ২০১২ সালে সংস্কৃত বিষয় স্নাতক, কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় থেকে ২০১৪ সালে সংস্কৃতে স্নাতকোত্তর এবং ২০১৫ সালে ত্রিপুরা রাজ্যের একলব্য ক্যাম্পাস থেকে বি.এড ডিগ্রি লাভ করেন। বর্তমানে তিনি রবীন্দ্রভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ে গবেষণারত। এছাড়া তিনি বিভিন্ন গবেষণামূলক পত্রপত্রিকায় এবং পুস্তকে লেখালেখি করছেন। তাঁর গবেষণামূলক কাজের পরিধির মধ্যে রয়েছে পুঁথি, বেদান্ত দর্শন ও অন্যান্য।

Cognition Publications
West Saptagram, Bisharpara, Birati,
Kolkata-700051, India
E-mail: cognitionpublications@gmail.com
Contact: +91 70447 72392
Web: www.cognitionpublications.com

ISBN: 978-93-92205-32-3
9 789392 205323

Scanned with OKEN Scanner

ISBN: 978-93-94449-23-7
(Peer-reviewed)

Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India

Dept. of Education, History & Sanskrit (U.G. & P.G.)
in collaboration with I.Q.A.C.
Sitananda College
Nandigram, Purba Medinipur

Editors
Dr. Bhaswati Mukhopadhyay
Dr. Naba Kumar Das
Dr. Sarita Singh

2023

ISBN: 978-93-94449-23-7
(Peer-reviewed)

Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India

Dept. of Education, History & Sanskrit (U.G. & P.G.)
in collaboration with I.Q.A.C.
Sitananda College
Nandigram, Purba Medinipur

Editors
Dr. Bhaswati Mukhopadhyay
Dr. Naba Kumar Das
Dr. Sarita Singh

2023

Book Title: **Different Dimensions of Art, Culture and Education in Ancient India**
(Peer-reviewed)
Edited by: Dr. Bhaswati Mukhopadhyay, Dr. Naba Kumar Das, Dr. Sarita Singh.
ISBN: 97-93-94449-23-7
Publication: 27th November, 2023

© Sitananda College, Nandigram, Purba Medinipur.

Publisher: **Bhaskar Raul**
Gangajumuna, Phandar, Belda,
Paschim Medinipur, 721424.

Printed at: Jayanti Printing House, Belda, Paschim Medinipur. 721424

Price: **250/-**

Disclaimer: The editors and publisher are in no way responsible for the informations and views expressed by the contributors.

Contents

Page

1. **Heritage Tourism: A Pathway for Preservation of Ancient Indian Culture**
   — Arpita Majumder — 1

2. **Mayasura's Mayasabha of the *Mahabharata*: The Wonder of Architecture of Ancient India**
   — Dr. Ayan Kanti Ghosh — 7

3. **Study of Ayurveda : The Forgotten History and Principles of an Indian Traditional Healing System with Reference to Midnapore District**
   — Dr. Shib Sankar Ghosh — 12

4. **Early temple Structure of India**
   — Pronil Das — 23

5. **Influence of Kalidasa in contemporary days: A critical study of *Abhijnana Shakuntalam***
   — Prothoma Saha — 28

6. **Impact of Buddhism on educational development in ancient India**
   — Raka Das & Dr. Pushpraj Singh — 34

7. **Societal Stereotyping and Sexual Equality: Understanding Male-Female Equations through the Structural Facets of the 6^{th}-8^{th} century Indian Temple**
   — Rupsha Ghosh — 38

8. **George Orwell's Dystopian Concept: A Reflection on Vedic Philosophy**
   — Sandip Kumar Kabi — 45

9. **Ancient Indian Education System: A Comprehensive Study**
   — Sanjit Debnath — 50

10. **Representation of Gender Line and Social Class in the Arts, Sculpture and Ar- chitecture of Khajuraho**
    — Shyam Sundar Mondal — 55

11. **The Analogy of Ancient & Modern Indian Education System: A Review of the Vedic Education System in Context of the Aristotelian Triad**
— Tirtha Sarathi Mohapatra 62

12. **Perinatal संस्कार-s in Ancient Hindu Tradition**
— Vrunda Deepak Vichare 70

13. **আদি-মধ্যযুগে পশ্চিমবঙ্গের দক্ষিণ-পশ্চিম অঞ্চলের বিশেষতঃ মেদিনীপুরের পুরাকীর্তি: একটি ঐতিহাসিক বিবরণ**
— আকতাবউদ্দিন শেখ 75

14. **জাতীয় শিক্ষানীতি ২০২০: বিদ্যালয় পাঠ্যক্রমে প্রাচীন ভারতীয় ভাষা, শিক্ষা ও সংস্কৃতির সংরক্ষণ ও অগ্রগমন**
— কার্তিক চন্দ্র ধাড়া ও ড. বামপদ বাউরি 82

15. **ভারতের শান্তিশিক্ষা : অতীত থেকে বর্তমান**
— ড. অভিষেক দাস 88

16. **রোহিনীঃ বাংলার নব আবিস্কৃত ভারত-রোম বাণিজ্য কেন্দ্র**
— ড. তপন কুমার দাস 94

17. **আচার্য বৃহস্পতির নীতিশাস্ত্রের বিশ্লেষণ**
— ড. দেবব্রত বেরা 99

18. **শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার আলোকে কর্মসংস্কৃতি**
— ড. প্রসাদ রঞ্জন চক্রবর্তী 103

19. **কতিপয় নাটক লক্ষণের যুক্ততাবিচার**
— ড. মণিদীপা দাস 109

20. **প্রাচীন ভারতে সুগন্ধি দ্রব্যের ব্যবহার : একটি ঐতিহাসিক পর্যালোচনা**
— ড. সেখ জাহাঙ্গির হোসেন 124

21. **আয়ুর্বেদশাস্ত্রের উপর দর্শনের প্রভাব সমীক্ষা**
— তরুণ কুমার মাইতি 128

22. **বর্তমান সময়ের নিরিখে স্বামী বিবেকানন্দের শিক্ষা-চিন্তার প্রাসঙ্গিকতা**
— নন্দিতা বারুই 131

23. অভিজ্ঞানশকুন্তলম্ নাটকে প্রতিফলিত মূল্যবোধ শিক্ষা :
একটি বিশ্লেষণাত্মক আলোচনা
— পবিত্র ভট্টাচার্য 138

24. শিক্ষা ও শূদ্র : প্রাচীন ভারতীয় শিক্ষাব্যবস্থায় শূদ্রের অবস্থান
— পল্লব বৈরাগ্য 142

25. ভারত ও দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ার সাংস্কৃতিক যোগাযোগ :
একটি প্রত্নতাত্ত্বিক অনুসন্ধান
— পিয়াসী ব্যানার্জী 146

26. মৌর্য যুগের শিল্প ও স্থাপত্য
— মোয়াজ্জেম হোসেন 152

27. বৈদিক যুগ থেকে আধুনিক যুগে শিক্ষার প্রকৃতির পরিবর্তন :
একটি সমীক্ষা
— শম্পা সরকার 158

28. मुक्तदूरस्थशिक्षायाः विकासे भारतीयानुभवः
— অরুপ প্রধান 163

29. संस्कृतसाहित्ये रसस्य स्थानविषये एका समीक्षा
— কাঞ্চন বারিক 169

30. भारतीयशिक्षणपद्धत्यां वैदिकशिक्षणपद्धत्याः प्रभावः
— জয়শ্রী পাল 173

31. ड. यतीन्द्रविमलचतुर्धुरीणविरचितभारतहृदयारविन्दे नारीणामवदानम्
— টোটন ভৌমিক 177

32. प्रबोधचन्द्रोदयालोके मानवमुक्तिः
— ড: পূর্ণিমা জানা 184

33. अलंकारनिरूपणे मम्मटविश्वनाथमतयोः तुलनामूलकं समीक्षात्मकमालोचनम्
— ড: সোনালী মুখোপাধ্যায়া 195

34. वैदिकजीवनदर्शने महायज्ञानां महत्त्वम्
— সুলোচন রানা 202

Heritage Tourism: A Pathway for Preservation of Ancient Indian Culture

Arpita Majumder♦

⊙Abstract:

Ancient Indian Culture made our country incredible with its diverse tangible and intangible culture. India has various aspects of culture like language, religion, food, dress, etc. and it has one of the world's largest collections of architectures, sculptures, paintings, songs, music, dance etc. Ethnic diversity of India has evolved in a variant essence of culture all of which reflect the country's rich cultural past. Preservation of tangible and intangible culture of India is getting a big challenge to our nation. In order to preserve these elements the Ministry of Culture implements a number of schemes. Cultural and heritage tourism is playing a great role to preserve the heritage sites incorporating the stakeholders which also helps in economic development of the area as well as the country.

The architectures of ancient India are the heritage of our country which is the witness of the glorious ancient history of our magnificent country. There are more than 15 ancient cultural heritage sites in India recognised by UNESCO. In this research paper it is tried to focus on the heritage and cultural tourism and its effects on preservation of ancient heritage sites as well as Indian Culture for future to explain the majestic history of ancient India.

Key Words: Culture, Heritage, Architecture, Tourism, Preservation

⊙Introduction:

"A nation's culture resides in the hearts and in the soul of it's people."

----- Mahatma Gandhi

Every country has its own culture and it also varied in different parts of the country which will exhibits the nation's identity and heritage. "Cultural heritage is the heritage of tangible and intangible heritage assets of a group or society that is inherited from past generations." (Wikipedia) Heritage is taken as history, culture of the land in which people live and it includes both tangible and intangible elements such as historical architectures including monuments, historical sites, battle fields, language, religion, literature, music, art, customs folklore practices, traditional lifestyles like food, drink and sports etc.

♦ Assist. Prof., Dept. of Geography, Swarnamoyee Jogendranath Mahavidyalaya.